

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

श्रीशङ्कराचार्य रिरचितम्  
॥ श्रीकृष्णष्टकम् ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

## ॥ श्रीकृष्णष्टकम् ॥

श्रिया श्लिष्टो रिषुः स्थिरचररपुरेदरिषयो  
धियां साक्षी शुद्धो हरिरसुरहन्ताजनयनः।  
गदी शङ्घी चक्री रिमलरनमाली स्थिररुचिः  
शरण्यो लोकेशो मम भरतु कृष्णहस्किरिषयः ॥ 1 ॥

यतः सरं जातं रिषदनिलमुख्यं जगदिदं  
स्थितौ निःशेषं योहरति निजसुखांशेन मधुहा।  
लये सरं स्वस्मिन् हरति कलया यस्तु स रिडुः  
शरण्यो लोकेशो मम भरतु कृष्णहस्किरिषयः ॥ 2 ॥

असूनायम्यादौ यमनियममुख्यैः सुकरणैः  
निरुध्येदं चित्तं हृदि रिलयमानीय सकलम्।  
यमीड्यं पश्यान्ति प्रररमतयो मायिनमसौ  
शरण्यो लोकेशो मम भरतु कृष्णहस्किरिषयः ॥ 3 ॥

पृथिर्यां तिष्ठन् यो यमयति महीं रेद न धरा  
यमित्यादौ रेदो रदति जगतामीशममलम्।  
नियन्तारं ध्येयं मुनिसुरनृगां मोक्षदमसौ  
शरण्यो लोकेशो मम भरतु कृष्णहस्किरिषयः ॥ 4 ॥

महेन्द्रादिदेरो जयति दितिजान् यस्य बलतो  
न कस्य स्वातन्त्र्यं क्लृचिदपि कृतौ यत्कृतिमृते।  
करिंरादेर्गर्गं परिहरति योहसौ रिजयिनः  
शरण्यो लोकेशो मम भरतु कृष्णहस्किरिषयः ॥ 5 ॥

বিনা যস্য ধ্যানং ব্রজতি পশুতাং সুকরমুখাং  
বিনা যস্য জ্ঞানং জনিমৃতিভয়ং যাতি জনতা।  
বিনা যস্য স্মৃত্যা কৃমিশতজনিং যাতি স রিভুঃ  
শরণ্যো লোকেশো মম ভরতু কৃষ্ণোহক্ষিরিষযঃ ॥ 6 ॥

নরাতঙ্কোত্তকঃ শরণশরণো ভ্রান্তিহরণো  
ঘনশ্যামো রামো ব্রজশিশুরযস্যোহর্জুনসখঃ।  
স্বযম্ভূতানাং জনক উচিতাচারসুখদঃ  
শরণ্যো লোকেশো মম ভরতু কৃষ্ণোহক্ষিরিষযঃ ॥ 7 ॥

যদা ধর্মগ্লানির্ভরতি জগতাং ক্ষোভকরণী  
তদা লোকস্বামী প্রকটিতরপুঃ সেতুধৃগজঃ।  
সতাং ধাতা স্বচ্ছো নিগমগণগীতো ব্রজপতিঃ  
শরণ্যো লোকেশো মম ভরতু কৃষ্ণোহক্ষিরিষযঃ ॥ 8 ॥

ইতি হরিরখিলাত্মাহহরাধিতঃ শঙ্করেণ  
শ্রুতিরিশদগুণোহসৌ মাতৃমোক্ষার্থমাদ্যঃ।  
যতিররনিকটে শ্রীযুক্ত আরির্বভূর  
স্বগুণবৃত উদারঃ শঙ্খচক্রাজহস্তঃ ॥ 9 ॥

॥ ইতি শ্রীকৃষ্ণাষ্টকং সমাপ্তম্ ॥